Sem. 4
MJ. 7

हिन्दी भाषा : उद्भव (उत्पत्ति) और विकास-क्रम

भाषाविदों ने हिन्दी भाषा के इतिहास को लगभग एक हजार वर्षों का माना है; किन्तु इसकी एक दीर्घकालीन परम्परा है। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के विकास की परम्परा वैदिक संस्कृत भाषा से प्रारम्भ होती है, जिसका समय 1500 ई० पू० माना गया है। यह वैदिक संस्कृत (1500 ई० पू० - 1000 ई० पू०) भाषा अपने विकास-क्रम में लौकिक संस्कृत (1000 ई० पू० - 500 ई० पू०), पालि (500 ई० पू० - पहली ईस्वी), प्राकृत (पहली ईस्वी - 500 ई०) तथा अपभ्रंश (500 ई० - 1000 ई०) ~~का~~ भाषाओं के रूप में विकसित होकर आधुनिक भाषा के युग में प्रवेश करती है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के अनेक क्षेत्रीय रूप थे, जैसे - शौरसेनी, पैशाची, ब्राचड, खस, महाराष्ट्री, मागधी, अर्ध-मागधी आदि। इन्हीं विभिन्न अपभ्रंश भाषाओं से आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ। इस विकास क्रम को प्रख्यात भाषाविद् डॉ० चटर्जी ने इस सारणी में बतलाया है -

आधुनिक भारतीय आर्य-भाषा
- (क) उदीच्य (उत्तरी) → (1) सिन्धी, (2) लहँदी (3) पूर्वी पंजाबी।
- (ख) प्रतीच्य (पश्चिमी) → (4) गुजराती (5) राजस्थानी
- (ग) ~~मध्यदेशीय~~ मध्यदेशीय → (6) पश्चिमी हिन्दी
- (घ) प्राच्य (पूर्वी) → (7) पूर्वी हिन्दी (8) बिहारी (9) उड़िया (10) बंगला (11) असमिया।
- (ङ) दक्षिणात्य → (12) मराठी।
- (च) पहाड़ी → (13) कश्मीरी (14) नेपाली (15) गढ़वाली (16) ~~कुमाऊँनी~~ कुमाऊँनी।

स्पष्ट है कि ग्यारहवीं शताब्दी तक आते-आते हिन्दी एवं अन्य भारतीय आर्यभाषाओं का आधुनिक सामने आ गया था किन्तु कुछ प्रभाव अपभ्रंश का अभी भी था। इसी समय पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी, पूर्वी हिन्दी और पहाड़ी - पाँच उपभाषाओं तथा इनसे विकसित क्षेत्रीय बोलियों जैसे- ब्रजभाषा, खड़ीबोली, जयपुरी, भोजपुरी, अवधी, गढ़वाली आदि

के रूप में हिन्दी विकसित हुई। यह हिन्दी भाषा के विकास का आदिकालीन चरण था।

1500 ई० के लगभग हिन्दी भाषा मध्ययुग के चरण में प्रवेश करती है। इस चरण में अवधी और ब्रजभाषा में हिन्दी की साहित्यिक रचनाएँ आईं। इस काल-खण्ड में भाषा पर बुन्देली और राजस्थानी भाषा का प्रभाव पड़ने के साथ-साथ खड़ीबोली के विकास का भी लक्षण दिखने लगा था। इस मध्यकालीन चरण में तत्सम प्रयोगों को प्रमुखता मिलने लगी। साथ ही, उर्दू-फारसी शब्दों को भी आत्मसात कर हिन्दी भाषा ने अपनी शक्ति का परिचय दिया। इसी कालखण्ड में ब्रजभाषा के रूप में लालित्य और माधुर्य से भाषा गौरवान्वित हुई।

1800 ई० के बाद हिन्दी भाषा के विकास का तीसरा चरण - आधुनिक काल आता है। ईसाई मिशनरियों के प्रयास से हिन्दी भाषा के खड़ीबोली रूप का विकास होता है। इसी समय खड़ीबोली गद्य भाषा का भी प्रचलन प्रारम्भ हुआ, जिसमें फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता के लल्लूलालजी तथा सदल मिश्र और बाद में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की भूमिका प्रमुख रही। इस खड़ीबोली हिन्दी के प्रचार में मुद्रण-कला ने विशेष योगदान किया। हिन्दी के समाचार-पत्रों का प्रकाशन शुरू हुआ, जिससे हिन्दी का स्वरूप स्थिर होने लगा। बीसवीं सदी के आते-आते पद्य-भाषा के रूप में भी खड़ीबोली का प्रचलन प्रारंभ हुआ।

समग्रतः कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा प्रारम्भ से ही अपभ्रंश के प्रभाव से मुक्त होते हुए अपना स्वरूप निश्चित करने की दिशा में अग्रसर रही। इसके विकास के मध्यकाल में इसकी दो प्रमुख शैलियाँ विकसित हुईं — फारसी शब्दों की अधिकता से युक्त उर्दू शैली तथा तत्सम शब्दों से युक्त इसकी शास्त्रीय शैली। आगे चलकर लिपि-भिन्नता के कारण हिन्दी की उर्दू शैली ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाया। इस विकास-यात्रा में हिन्दी भाषा ने न केवल फारसी-अरबी, बल्कि अंग्रेजी एवं अन्य यूरोपीय शब्द-सम्पदा को भी आत्मसात किया। आज भी वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से समृद्ध बनने की दिशा में हिन्दी भाषा अग्रसर है।